भारतीय समाज और जादू, तंत्र–मंत्रः विश्वास और कारण

डॉ. अर्चना गोदारा

सारः–

वर्तमान में आधुनिक एवं औद्योगिक युग में जहां व्यक्ति वैज्ञानिक प्रगति की बात करता है वही दूसरी तरफ जादू तंत्र–मंत्र में अपने वि वास को बनाए रखे हुए। जो कि विपरित विचारधारा को दर्शाता है। संसार के सभी दे ों में किसी न किसी रूप में इसका अस्तित्व है। संबधों के बदलते सामाजिक स्वरूप ने व्यक्ति के जीवन को तनावग्रस्त बना दिया है। आगे बढने की चाह एवं उच्च पदों का प्राप्त करने की इच्छा व्यक्ति की महत्वकाक्षां को बढाता है।यही कारण व्यक्ति केवल स्वयं के बारे में सोचता है इस स्वार्थपरख सोच ने व्यक्ति को एकांकी बना दिया है। अतः वह अपने कश्टों को दूसरो के सामने प्रकट कर स्वयं को कमजोर साबित नही करना चाहता।

प्राचीन समय में नवीन तकनीक एवं ज्ञान तथा चिकित्सा के नवीन प्रयोगों द्वारा उपचार के साधन सामान्य जनता को उपलब्ध नही होते थे तब ये बाबा औझा ही उपचार करने वाले माने जाते है। वर्तमान समय में ये व्यक्ति की मानसिक स्थिति को जानकर उसपर अपने विचारो का प्रभाव इसप्रकार से डालते है कि व्यक्ति इस प्रभाव में लंबे समय तक रहता है एवं जादू, तंत्र–मंत्र में वि वास करने लगता है। प्रस्तुत भाोध पत्र में इन्ही विश्वास, तांत्रिक क्रिया एवं कारणों का विश्लेशण करने का प्रयास किया जाएगा।

संकेत शब्दः– जादू, तंत्र–मंत्र, परम्पराएँ, अलौकिक शक्ति, सिद्ध गुरू।

जादू तंत्र–मंत्र एक ऐसा माध्यम है जिससे अलौकिक शक्ति द्वारा मानवीय एवं प्राकतिक घटनाओं को प्रभावित किया जा सकता है। मानव के मन में सदैव यह चाहत रही है कि वह कुछ अलौकिक शक्ति द्वारा ऐसे कार्य को करें जो एक सामान्य मनुष्य के लिए करना असम्भव हो। वर्तमान समाज शिक्षित समाज है तथा शिक्षित व्यक्तियों के उच्च पदों पर आसीन होने के उपरान्त भी जादू तंत्र–मंत्र में प्राचीन समयकी भांति ही विश्वास बना हुआ हैं। इस विश्वास का ही परिणाम है कि व्यक्ति अपने विभिन्न उदे यों की पूर्ति हेतु जब–तब इसका प्रयोग करता रहता है। वर्तमान समय मे ना केवल ग्रामीण समाज में बल्कि शहरी समाज में भी इससे अत्यधिक प्रभावित है। विश्व के अधिकांश देशों में शिक्षा और विज्ञान प्रगति के पथ की और अग्रसर है इस स्थिति में भी भारत जादू तंत्र–मंत्र के जाल में फंसा है । जो व्यक्ति की मानसिक सोच एवं विकास की भावना को गर्त की और धकेल रहा हैं। जादू, तंत्र –मंत्र के प्रचलन में अब धार्मिकता एवं बाजारवाद भी जुड़ता जा रहा है। जो मानव को भावात्मक से प्रभावित कर इसमें विश्वास करने हेतु मजबूर करते है। मानव की भविष्य की प्रति अनिश्चितता, जीवन की जटिलता, कठिनाईया एवं प्रतिस्पर्धात्मिक जीवन शैली उसे जादू और तंत्र–मत्रं मे विश्वास करने हेतु विवश करती है। वर्तमान में धर्म के नाम पर नजर रक्षाकवच, श्री लक्ष्मी धनवर्षा यंत्र, हनुमान यंत्र आदि बेचे जा रहे है। मीडिया के माध्यम से वास्तु ाास्त्र, फेंगशुई, ज्योतिष उपायों के नाम लेकर अपरोक्ष रूप से जादू तंत्र–मंत्र को अधिक बढ़ावा दिया जा रहा है। व्यक्ति धर्म की आड़ में भी जादू–टोना और तंत्र –मंत्र जैसे कार्यो को कर रहा है। जो व्यक्ति की जादू, तंत्र–मंत्र के प्रति विश्वास एवं मान्यताओं को मजबूत बना रहा है।

जादू–टोना, भूत –प्रेत तथा टोने –टोटके आदि का संबंध ऋग्वेद काल से माना जाता है। अथर्ववेद में तो अधिकतर इन्ही सब विषयों का वर्णन है। वर्तमान वैज्ञानिक युग में भी ग्रामीणों अचंलों मे व्यक्ति चिकित्सक के पास जाने से पूर्व झाड़–फूंक से उपचार को महत्व देता है। लाभ प्राप्त न होने के स्थिति में वे अस्पताल जाता है। रेडक्लिफ ब्राउन और मैलिनोवस्की व्यक्ति की मनोवैज्ञानिक जरूरत को सीधा जादू से जोड़तें है उनका मानना है कि मानसिक रूप से चिंतित व्यक्ति जादू पर अधिक वि वास करता है। मानसिक शान्ति के लिए जादू एक सकारात्मक प्रकार्य करता है।

तंत्र–मंत्र का प्रारम्भः– प्रथम सहस्त्राब्दि के मध्य काल से वर्तमान समय तक एशिया के इतिहास में तंत्र–मंत्र,जादू–टोना किसी न किसी प्रकार की क्रिया एवं रूप में विद्यमान रहा है। इस समयावधी में जादू,तंत्र–मंत्र विद्या एवं ज्ञान की शाखा के रूप में स्थापित हुआ।

एशिया के विभिन्न देशों जैसे :– भारत,तिब्बत नेपाल,भुटान,पाकिस्तान,श्रीलंका आदि में जादू,तंत्र–मंत्र का प्रयोग एवं अभ्यास होता रहा है तथा वर्तमान में भी यह जोरों पर है। भारत भी इससे अछुता नही है। भारत में कापालिक सेवा, सिद्वकला,योगिनीकलात्रिका,नाथसिद्वा, अघौरी बंगाली शक्ता, वैष्णव प्रथाऍं आदि जादू,तंत्र–मंत्र की विभिन्न परम्पराएं एवं प्रक्रियाएं प्रचलित रही है तथा आज के समय मे भी अपना प्रभाव बनाए हुई है। सैमुअलका मानना है कि विश्व के अधिकांश देशों एवं एशिया की तांत्रिक –मांत्रिक परम्पराए भारतीय शामनिक संस्कृति के महापुरूषों से जुड़ी हुई है जिन्हे सिद्व या महासिद्व कहा जाता है। इन्ही सिद्वपुरूषों द्वारा वर्तमान मे भी इसके अस्तित्व को बनाए रखाहुआ है।

सिद्व गुरूः–

तंत्र–मंत्र एवं जादू–टोने करने वालों सिद्व गुरू को साधु, बाबा, सन्यासी, ओझा, योगिनी, जादूगरनियां तांत्रिक आदि नामों से पुकारा जाता हैं। इन कर्ताओं को तीन भागों में बांटा गया हैः–

प्रथम समूह में जादू, तंत्र–मंत्र के वे विशेषज्ञ होते है जिन्हे जादू एवं तांत्रिक क्रियाओं का विधिवत ज्ञान प्राप्त होता है।

द्वितीय समूह में जादू–टोने व तंत्र–मंत्र के वे विशेषज्ञ होते है जिन्हे दिव्य शक्ति प्राप्त होती है। इन्हे विधिवत् ज्ञान प्राप्त नही होता है। ये केवल मौखिक ज्ञान का प्रयोग करते है।

तृतीय समूह के अन्तर्गत वे सिद्व आते है जिन्हे जादू–टोने का विधिवत् ज्ञान नही होता है। ये सिद्व गुरू अनुभव एवं व्यक्तिगत अभ्यास के माध्यम से इस विधि से जुड़े रहते है। जन समूह की इन सिद्व गुरूओं की प्रति अत्यधिक विश्वास एवं तांत्रिक क्रिया की विभिन्न मान्यतांए प्रचलित है।

जादूः– जादू तांत्रिको, मौलवियों एवं औझाओं द्वारा की जाने वाली वह प्रकिया है जिसमें व्यक्ति मानवोत्तर शक्तियों को स्वयं के वश में कर लेता है तथा उन शक्तियों से मनवांछित कार्य पूर्ण करवाने का प्रयास करता है। जादू को उस प्रक्रिया का भी परिणाम माना जाता है जो साधक ने साधना में की होती है।

मंत्रः– यह जादू की प्रक्रिया का प्रथम एवं आधारभूत तत्व है। जादू करने वाला कुछ निश्चित शब्दों का उच्चारण करते हुए जादू की क्रिया करता है। ये शब्द एव वाक्य ही मंत्र कहलातें है। भिन्न– भिन्न कार्यो हेतु भिन्न भिन्न मंत्रों का प्रयोग किया जाता है।

झाड़–फुंकः– यह बाबा, मौलवी, औझा एवं पूजारी द्वारा की जाने वाली क्रिया है। मोरपंख, चाकू,झाडू. आदि साधनों के द्वारा जमीन पर विराज कर कुछ मंत्रों के उच्चारण के साथ इस क्रियाको सम्पन्न किया जाता है। इस क्रियामें मंत्रों के उच्चारण के पश्चात् पीड़ित व्यक्ति के शरीर के किसी भाग पर फूंक मारी जाती है। यह प्रक्रिया झाड़–फूंक कहलाती है। यह क्रिया व्यक्ति के नजर लगने या कोई शारीरिक पीड़ा होने पर सम्पन्न की जाती है।

मनौवैज्ञानिकों के अनुसार व्यक्ति निम्नलिखित कारणों से तंत्र –मंत्र करवाता हैः–

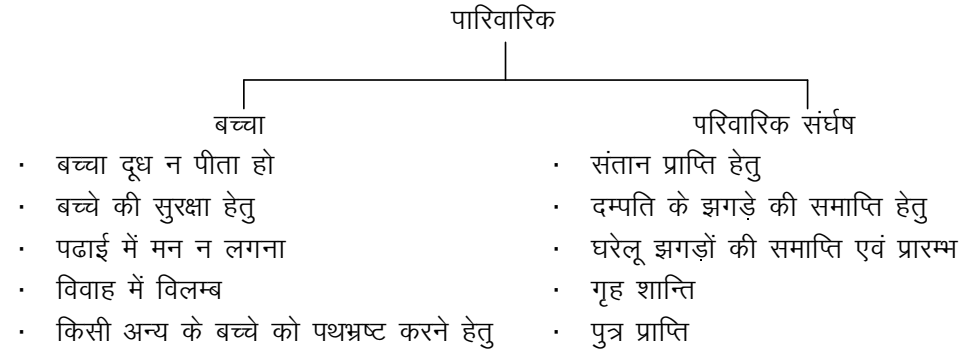

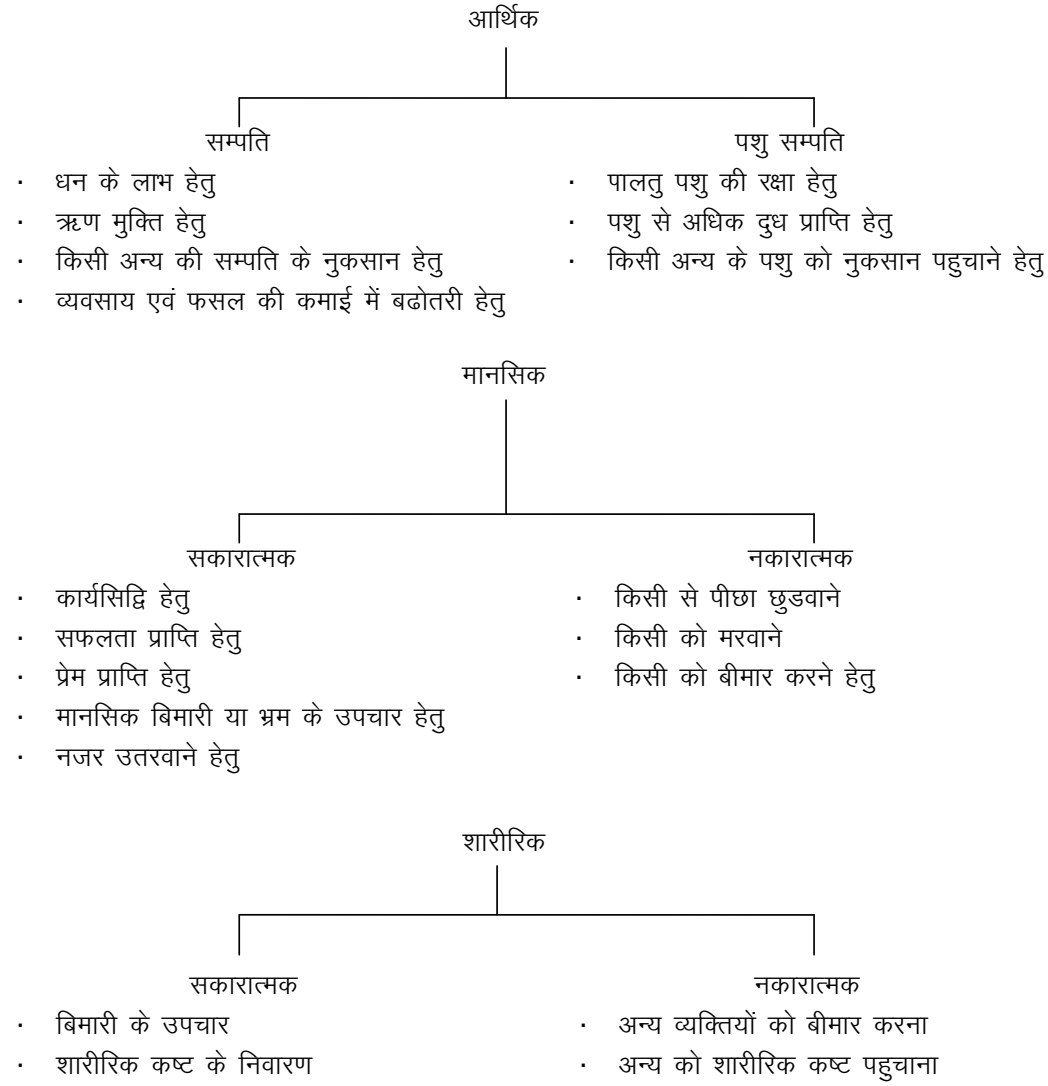

आदि विभिन्न कारणों से व्यक्ति जादू, तंत्र–मंत्र के चक्रव्यूह में फंस जाता है।

राजस्थान के झुन्झुनू शहर के 50 परिवारों पर किए गए अध्ययन से जो तथ्य उभर कर आए उन्हे निम्न रूप मे देखा जा सकता है।

तांत्रिक कियाः– तांत्रिक किया हेतु विभिन्न सांमग्री एवं तरीको का प्रयोग किया जाता है जिसमें पीड़ित का उपचार किया जा सके।

ताबीजः– कागज या पत्ते पर मंत्र लिखकर उसे कपड़े या धातू में लपेट कर शरीर के किसी भी हिस्से पर बांध लिया जाता है, जब तक की उद्वे य पूर्ण नहीं हो जाता।

प्रकारः–

- मंत्र लिखा ताबीज
- आयतें लिखा हुआ ताबीज

- दांत का ताबीज
- तीर का ताबीज
- नाखून का ताबीज

जादू, तंत्र– मंत्र के प्रयोग में लिए जाने वाली सामग्रीः–

रोली	अनाज	चूड़ी
फल	फूल	झाड़ू
घी	दीपक	मिठाई
बिन्दी	काजल	नाल
भभूत	शराब	पंख

व्यक्ति एवं परिवार पर प्रभावः– यदि कोई भी व्यक्ति किसी स्थिति में तांत्रिक के प्रभाव में आता है या जादू, तंत्र– मंत्र मे विश्वास करता है तो इसका प्रभाव उसकी सोच एवं मानसिक स्थिति पर भी पडता है तथा व्यक्ति का परिवार भी इससे प्रभावित होता है। वर्तमान जीवन शैली में सामाजिक मेल जोल कम तथा तनाव अधिक है। व्यक्ति तनाव व परेशानी से मुक्त होने के लिए सरल एव जल्द उपाय चाहता है। इसी कारण वह तांत्रिको द्वारा दिए गए विज्ञापनो एवं किसी हितैशी समझने जाने वाले व्यक्तियों के द्वारा इन बाबा ओझा के सम्पर्क मे आ जाते है। तीव्र गति से बदल रहा हमारा सामाजिक परिवेश एवं भौतिकवादी संस्कृति भी मानव को मानव से अलग कर रही है। प्रत्येक व्यक्ति अपनी नीजि जिंदगी में किसी की दखल नही चाहता एवं अन्य व्यक्ति के विकास को भी बर्दास्त नही कर पाता। ये स्थिति तनाव को उत्पन्न करती है जिसकाउपचार एक डॉक्टर द्वारा लगभग असम्भव है। अतः व्यक्ति मानसिक शान्ति हेतु इस कुचक्र में फंस जाता है। यही वजह है कि आज के वैज्ञानिक युग में भी बाबा, ओझाओं का व्यापार एवं उनकी मांग बनी हुई है।

इन सब कारणों को दो वैयक्तिक अध्ययनों के माध्यम से स्पष्ट किया जा सकता है। प्रस्तुत दो वैयक्तिक अध्ययन केवल उदाहरण है जो तांत्रिको में विश्वास करने की परिस्थितियों की और संकेत करते है इस विषय पर बहुत से उदाहरण प्रस्तुत किए जा सकते है परन्तु शोध पत्र केवल झुन्झुनू शहर के निवासियों तक सीमित है, उन्ही की कथा उदाहरण के रूप में प्रस्तुत है।

वैयिक्तक अध्ययन–1

झुन्झुनू शहर निवासी 31 वर्षीय संजू(परिवर्तित नाम) का बेटा नींद में डर कर उठ जाता था। डॉक्टर से उपचार करवाया परन्तु सफलता नही मिली। किसी रिश्तेदार के कहने पर शहर मे ही किसी बाबा से सम्पर्क किया तो बाबा ने एक ताबीज बनाकर बच्चे को दिया और कहा इसे अपने गले में ड़ालकर रखना। ये तुम्हारी रक्षा करेगा और कोई तुम्हारा किसी प्रकार से नुकसान नही कर सकता।

ये एक मानसिक स्थिति को मजबूत करने वाला उपचार था जो बातों से किया था तथा ताबीज को रक्षक के रूप में पेशकर मानसिक स्थिति को और मजबूत कर दिया गया जिससे बच्चे ने डरना छोड़ दिया और महिला का बाबाओं के प्रति विश्वास मजबूत हो गया।

वैयिक्तक अध्ययन–2

झुन्झुनू में निवास करने वाले 45 वर्षीय कपिल (परिवर्तित नाम) के विवाह के कुछ सालों तक बच्चा नहीं होने पर चिकित्सक से उपचार करवाया परन्तु निराशा ही हाथ लगी । अपने पड़ोस में रहने वालें मित्र की सलाह पर किसी मौलवी से मिले। उन्होने कहा मेरे द्वारा किये गए उपचार एवं तांत्रिक किया के साथ –साथ चिकित्सक के उपचार को भी जारी रखे। सफलता अवश्य मिलेगी। हर शुक्रवार को एक बार अवश्य आकर मिले। मौलवी उन्हे खुश रहने की सलाह देता एवं सफलता का विश्वास दिलाता। तीन वर्ष उपरान्त उन्हे बच्चा हुआ।

इस स्थिति में भी व्यक्ति को मानसिक रूप से खुश रहे एवं सफलता पर विश्वास बनाऐ रखने का प्रयास किया गया जिसके

परिणाम स्वरूप व्यक्ति ने चिकित्सक से उपचार लम्बे समय तक जारी रखा और उन्हे सफलता प्राप्त हुई। इस घटनाक्रम के बाद वास्तविक कारणों के बजाए मौलवी एवं जादू, तंत्र–मंत्र में व्यक्ति का वि वास अधिक हो गया ।

ये वैयक्तिक अध्ययन इस तथ्य की और इंगित करते है कि सामाजिक सम्पर्क के अभाव एवं अपने तक सीमित रहने की प्रवृति ने मनुष्य का जीवन तनावमय बना दिया है। मनुष्य अपनी खुशियां पैसो से खरीदना चाहता है जो कि खुशी का भुलावा मात्र है। स्वयं के समूह, परिवार एवं समाज के बीच मधुर संबंध बनाए रखने से व्यक्ति में तनाव नही आता। वह स्वयं को सुरक्षित महसुस करता है। यह स्थिति व्यक्ति को भावनात्मक एवं मानसिक रूप से मजबूत बनाती है और बहुत सी शारीरिक एवं मानसिक बीमारियों से बचाती है। वर्तमान जीवन शैली में एकल परिवार का महत्व बढ़ गया है जिससे व्यक्ति के जीवन में एकांकीपन एवं तनाव आ गया है। व्यक्ति अपने मानसिक एवं शारीरिक कष्टों का उपाय बाबाओं, ओझाओं के आशावादी एवं लुभावनों विज्ञापनों से प्रभावित हों, इन जादू, तंत्र–मंत्र से करवाना चाहता है। जो कि उसे सरल एवं सस्ता उपाय लगता है। यदि उन्हे किसी प्रकार की सफलता मिल जाती है तो यह विश्वास और मजबूत हो जाता हैं। और व्यक्ति इनके चक्रव्यूह में फंसता चला जाता है।

व्याख्याता, समाजशास्त्र

चौ.ब.रा.गो.राज., कन्या महाविद्यालय, श्रीगंगानगर

संदर्भ सूचीः–

- अरविन्दः उत्तर योगी, लोकभारती प्रकाशन, 1972
- ब्रहा, एन के : फिलास्फी ऑफ हिन्दू साधना, लंदन, 1939, उद्धृत आचार्य परशुराम चतुर्वेदी,रहस्यवाद,बिहार राष्ट्रभाषा परिषद–5,1973
- शुक्ल, आचार्य पं.शत्रुधन लालः भारतीय तंत्र विद्या, प्रकाशकः हिन्दी सेवा सदन,मथुरा,संस्करण–द्वितीय–2007
- डेविड, गार्डन व्हाईटः तंत्र इन प्रेक्टिस , मोतीलाल बनारसी दास प्रा. लि. दिल्ली,2000
- कविराज, गोपीनाथ : तांत्रिक साधन और सिद्वान्त, अनुवाद पं. हंसकुमार तिवारी, बिहार, राष्ट्रभाषा परिषद पटना –800004
- शान्ति देव, साधुः एनसाइक्लिोपिडिया ऑफ तंत्र, वाल्युम प्रथम, कॉस्मोपब्लिस, नई दिल्ली–1999
- सागर, प्रमोदः तंत्र–मंत्र एवं टोटके की संयोजन एवं प्रस्तुति की विचित्र पुस्तक, श्री सरस्वती प्रकाशन, अजमेर

पत्रिका

- तंत्र–मंत्र, यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर, राजस्थान, अप्रैल 2010 सितम्बर 2010